

शोभा न्यारी (१६१)

फूलों के बंगले राजे साईं सुकुमार देखो।
गोदी में बैठे जांके युगल सरकार देखो॥

फूल सिंहासन छत्र फूलों का सोहे
साईं सुकुमार शोभा मन को मोहे
देव गगन मंह करते जैकार देखो॥

प्रमोद बन से आई झांकी प्यारी
तीनों लोकों में जाकी शोभा न्यारी
अनोखे शान से परम रिझिवार देखो॥

मधुर मुस्कान से फूल वर्षावे
कृपा कटाक्ष से सुधा सरसावे
भक्ति भण्डार साईं अति उदार देखो॥

गुलाब इतर के चले हैं फूहारे
बहती हैं जिनसे रस की धारें
प्रिया प्रीतम लिए कथा कलितार देखो॥

सहिचर स्नेह सों चंवर झुलावे
मधुर मधुर मिल गुण गावे
सरल स्नेह निधि संत सरदार देखो॥

रंग महल में नित रंग वर्षे
निरखि निरखि छबि सुर मुनि हर्षे
बाबल मिठे की यह बंगले बहार देखो॥

त्रिविधि समीर बहे सुखकारी
सुख विपास की फूली फुलवाड़ी
फूलों के महल बैठे मैगसि मनठार देखो॥